

23

वर्ष : 2019-20

ISSN : 0976-5778

ईसुरी

बुन्देलखण्ड के आधुनिक साहित्यकारों पर केन्द्रित



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा नामित शोध पत्रिका- संख्या : 48672

ईसुरी-23

(पृथ्वी समीक्षित शोध पत्रिका)

वर्ष - 2020 ISSN : 0976-5778

प्रधान संपादक

चन्दा बेन

संपादक

राजेन्द्र यादव

(सचिव बुन्देली पीठ)

प्रबंध संपादक

आशुतोष कुमार मिश्र



प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,

सागर (म.प्र.)

ईसुरी-23

वर्ष - 2020 अंक - 23 ISSN : 0976-5778

संरक्षक

प्रो. आर.पी. तिवारी

कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

कर्नल राकेश मोहन जोशी

कुलसचिव, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

संस्थापक संपादक

प्रो. कान्तिकुमार जैन

परामर्शदाता

प्रो. बी.आई. गुरु

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

प्रधान संपादक

प्रो. चन्दा बेन

संपादक

डॉ. राजेन्द्र यादव

(सचिव, बुन्देली पीठ)

प्रबंध संपादक

डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

संपादक मण्डल

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

डॉ. हिमांशु कुमार

डॉ. अरविन्द कुमार

डॉ. अफरोज बेगम

डॉ. विवेकानन्द उपाध्याय

डॉ. मनीष कुमार

सत्यप्रकाश उपाध्याय

संतोष सोहगोरा

सतीष कुमार

विवेक विसारिया

आवरण छाया : उमेश यादव (सैकड़ों वर्ष प्राचीन कल्प वृक्ष, ओरछा म.प्र.)

प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

अनुक्रम

प्रधान संपादक की कलम से...	- प्रो. चन्दा बेन	3
संपादकीय	- डॉ. राजेन्द्र यादव	5

बुन्देलखण्ड : कृति केन्द्रित मूल्यांकन

1. बुन्देली का सांस्कृतिक नाट्य उत्कर्ष (संदर्भ लोकनाथ सिलाकारी का राजा हरदौल बुन्देला)	- प्रो. राजमति दिवाकर	9
2. बुन्देली का रामभक्ति काव्य (संदर्भ भगवानदीन मिश्र का राजेन्द्र विलास महाकाव्य)	- प्रो. सुरेश आचार्य	12
3. बुन्देलखण्ड के रससिक्त अध्येता (संदर्भ हरिविष्णु अवस्थी का बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनाएं)	- प्रो. चन्दा बेन	14
4. बुन्देलखण्ड की समृद्ध परंपरा : प्रबोध महाकाव्य (संदर्भ जगदीश कुमार कुशवाहा)	- प्रो. सरोज गुप्ता	18
5. बुन्देली भाषा का रसात्मक महाकाव्य (संदर्भ मायूस सागरी का ब्रजरज)	- प्रो. चन्दा बेन एवं सुधीर साहू	20
6. सद्यः सीरोत्कर्षण सुरभिः : बुन्देली के ललित निबंध (संदर्भ पद्मश्री कैलाश मड़बैया के निबन्ध)	- डॉ. आशुतोष	24
7. बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्तिकोष (संदर्भ आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल)	- डॉ. अफरोज बेगम	32
8. बुन्देली लोक का काव्यात्मक उछाह : ईसुरी (संदर्भ दया दीक्षित का फाग लोक के ईसुरी)	- डॉ. सुजाता मिश्र	36
9. बुन्देली लोक संस्कृति का सृजनात्मक वैभव (संदर्भ मोतीलाल चौरसिया : बुन्देली लोकगीतों के सांस्कृतिक अध्ययन)	- रतिराम अहिरवार	40

बुन्देलखण्ड : कृतिकार केन्द्रित मूल्यांकन

10. सागर जिले का साहित्यिक वैभव	- वृन्दावन राय 'सरल'	45
11. अम्बिका प्रसाद दिव्य की काव्य-साधना	- प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	49
12. लोकजीवन के चितरे कवि : अवधकिशोर जड़िया	- प्रो. बहादुर सिंह परमार	59
13. जयन्ति ते सुकृतिनो	- टीकाराम त्रिपाठी	66

14. मीत मेरे, दो विदा, मैं जा रहा हूँ : कांतिकुमार जैन	- प्रो. नरेन्द्र सिंह	69
15. आलोचक, नाटककार : पं. लोकनाथ द्विवेदी 'सिलाकारी'	- राहुल सिलाकारी (पत्रकार)	73
16. रमेशदत्त दुबे : एक जीवन्त व्यक्तित्व	- महेशदत्त अग्निहोत्री	76
17. बुन्देली गज़ल की राष्ट्रीय पहचान : महेश कटारे 'सुगम'	- प्रो. बहादुर सिंह परमार	78
18. साहित्य साधक : डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैया	- डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय	82
19. बुन्देली के अद्वितीय संपादक एवं संकलनकर्ता : प्रो. बलभद्र तिवारी	- डॉ. राजेन्द्र यादव एवं प्रदीप कुमार सौर'	87
20. वृंदावन राय 'सरल' के काव्य में समाज दर्शन	- डॉ. अवधेश कुमार	92
21. संवेदनात्मक यथार्थ के चितरे : शिवकुमार श्रीवास्तव	- अभिषेक दांगी	98

बुन्देलखण्ड : इतिहास, कला एवं संस्कृति केन्द्रित मूल्यांकन

● इतिहास

22. अमर शहीद मधुकर शाह बुन्देला	- भुवनभूषण देवालिया	103
23. 1857 की क्रान्ति और बुन्देलखण्ड की धरती	- डॉ. अरविन्द कुमार एवं डॉ. हिमांशु कुमार	107
24. इतिहास, जौहर और बुनकरों की चन्देरी	- डॉ. राजेन्द्र यादव	111

● कला

25. सागर का कला वैभव	- प्रो. विवेकदत्त झा	117
26. बुंदेलखण्ड एरण का मूर्तिशिल्प एवं प्राचीन लोकसंस्कृति	- प्रो. नागेश दुबे	123
27. नवागढ़ का प्राचीन एवं अर्वाचीन स्वरूप	- ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत एवं राजीव कुमार जैन	130

● संस्कृति

28. लोकनाट्य परम्परा और बुन्देली संस्कृति	- डॉ. गंगाधर झा	135
29. तुलसीदास के साहित्य में बुन्देली लोकजीवन	- पद्मश्री डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे	138
30. बुन्देलखण्ड की प्राचीन नदियाँ	- एस.के. पारिख	141
31. बुन्देली लोक गाथाओं का सांस्कृतिक स्वरूप	- डॉ. दुर्गेश दीक्षित	146
32. बुन्देलखण्ड का धार्मिक पर्यटन	- डॉ. गौरी खोटे	151

● परिशिष्ट

33. ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी : स्मरणीय साक्षात्कार	- प्रो. ऊषा भटनागर	156
34. बुन्देली लघुकहानी : 'बरौटी'	- ओमप्रकाश रिछारिया	159

वृंदावन राय 'सरल' के काव्य में समाज दर्शन

डॉ. अवधेश कुमार*

मानवीय जीवन-मूल्यों के हिमायती एवं सामाजिक समसामयिक विषयों को आधार बनाकर अपनी रचनाओं से अनूठी पहचान बनाने वाले बुन्देली माटी के सहज, सरल और सौम्य कवि वृंदावन राय 'सरल' हिन्दी और बुन्देली साहित्य में एक सफल रचनाकार के रूप में अनूठी पहचान है। सहज भाव-प्रवणता, सौम्यता और सरलता के कारण लोक जनमानस में कवि 'सरल' की उपाधि से प्रतिष्ठित हैं। इनके व्यक्तित्व में भावसत्य की अभिव्यक्ति और गुण को सहज ही देखा जा सकता है। बुन्देली माटी की संस्कृति, कवि के अंतर्मन में रची-बसी बसी हुई है। बाह्य और आंतरिक भावाभिव्यक्ति एकात्मिक झलक इनके व्यक्तित्व को अलग पहचान दिलाती है। इसी कारण बुन्देली काव्य साहित्य के दर्पण में इनकी तस्वीर बिल्कुल साफ नज़र आती है। यानी एक साहित्यकार की जो असल पहचान है, वह वृंदावन राय के व्यक्तित्व और कृतित्व में बिल्कुल स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इनके काव्य वाङ्मय में संस्कृति का सर्जनात्मक पक्ष, ऐतिहासिक चेतना और विकासात्मक संभावना बेहद महत्वपूर्ण है। साथ ही संस्कृति की पूर्ण सर्जनात्मकता है, जो विचारों, बिम्बों, प्रतीकों और उपमानों के माध्यम से साहित्य और समाज के विविध रूपों को संवारने में नया रंग-रूप देता रहा है।

वृंदावन राय 'सरल' का जन्म बुन्देलखण्ड में सागर जिले के खुरई में 03 जून, 1951 ई. को हुआ है। पेशे से इंजिनियर होने के बावजूद भी साहित्य से इनका गहरा प्रेम रहा है। मानवीय मूल्यों का नैतिक रूप इनके व्यक्तित्व और कृतित्व में समाया हुआ है। इसी का फल है कि साहित्य की अविरल धारा को अपने अंतर्मन में बहने से रोक नहीं पाये। सरल के साहित्य उपवन में मानवीय और नैतिक फल-फूल फलते और फूलते रहे हैं। इनका काव्य संसार बुन्देली और हिन्दी की अमूल्य धरोहर है। वृंदावन राय ने देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में भी लेखन कार्य करते रहे हैं। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्रों से इनके सामाजिक वैचारिक अभिव्यक्ति को अक्सर सुना जाता है। इनकी खूबसूरती यह है कि अपनी वाणी और विचार से ये जनमानस की चेतना को स्वतः ही आकर्षित कर लेते हैं। सरल जी को देश के विभिन्न सम्मान से विभूषित होने को गौरव, इनकी साहित्य सेवा में कर्मरत रहने का ही परिणाम है। इनको 'काव्य प्रतिभा सम्मान भुसावल', 'साहित्य श्री इलाहाबाद', 'नजीर बनारसी सम्मान बनारस', 'सारस्वत सम्मान कोलकाता-2003', 'रवीन्द्रनाथ टैगोर सारस्वत सम्मान कोलकाता', 'काव्यलंकार सम्मान ऋषिकेश' एवं 'हिमालय सम्मान दमन-2012' आदि से सम्मानित किया गया है।

*हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003 मोबाइल : 8853309388

‘सरल’ का काव्य-संसार गजल, गीत, बाल कविताएँ, दोहा, कविता, हाइकु, भजन आदि अनेक विधाओं से बैधा हुआ है। जिसमें ‘पूरु ही पूरु’- गजल संग्रह, ‘आम का सच’- काव्य संग्रह, ‘को का के र ओ’- ‘तुन्देरी काव्य संग्रह’, ‘मे भी बच्चा था’- बाल कविताएँ, ‘नयाकनी’, ‘आदावे सुखन’, ‘रिमाशारा’ आदि संग्रह हैं। ‘पूरु ही पूरु’ उनकी पन्द्रह वर्षों की रचना धर्मिता का प्रतिफल है। यह काव्य संग्रह मानवीयता और मूल्यों के सच्ची भावाभिव्यक्ति को लक्ष्योन्मुख करके रचा गया है, जिसमें जीवन का यथार्थ उद्गीत व्याप्त है। मानवीय धर्म की सचेत व्याख्या के साथ जीवन की मधुरिम कल्पना का स्थापन और आत्म दृष्टि की आत्मपरक व्यंजना है। काव्य की प्रभावशीलता में प्रसाद, माधुर्य और तावध है, जो कविता को गंभीरता तथा जनमानस को सहज आत्मपुष्ट कर लेती है। जीवन की सच्ची अभिव्यक्ति के साथ लोक की कल्याण भावना को रेखांकन स्पष्ट झलकता है।

कवि समाज और उसकी समस्याओं से बखूबी परिचित और मुखातिब है। इसी कारण इनकी रचनाओं में सामाजिक तथ्य गहराई से दिखाई देते हैं और इनके अंतर्भूत की अभिव्यक्ति व्यक्ति, समाज, राष्ट्र को मौलिक कर्तव्य की ओर ले जाती है। निश्चित रूप से इनकी रचनाओं में कबीर की छाया उभरकर सामने आती है। सच्चे शब्दों में कहें तो कबीर की राह पर चलने वाले लोकप्रभा के कवि वृंदावन राय ने जो यथार्थ अपने आस-पास देश और मनुष्य किया, उसी को अपनी रचना में व्यक्त किया है -

दुनिया देख ले हम पर, तुल्यों और फरमाकर।
अपना धा-न-छोड़ेंगे, हम किसी से घबराकर।।
जब भी बाला मौनों ने, पार करना अपनी हद।
सर पटक के रोयी है, साधनों से टकाकर।।
पत्थरों को काटा है, हमने कितने फन से।
तू पराई है तो आ, आ देख राह में आकर।।

वृंदावन राय के काव्य में जीवन की सच्ची अनुभूति समाहित है, जिसमें आधुनिक संवेदन, सामाजिक विघटन, मानवीय नैतिक पतन, लोक न्याय, आत्मनिष्ठ अथवा इत्यादि आम-यास की परिस्थितियों से उपजे अनुभव और उसकी प्रतिक्रिया का स्वरूप स्पष्ट रूप से झलकता है। गाँवों में आम इंसान पर सामाजिक व्यवस्था की मार से आहत, आम आदमी की प्रताड़ना, दुःख, उदासीनता आदि को इनके काव्य में अनुभव किया जा सकता है। जैसे-

शोषण अलाव शेरनों जलते हैं गाँव में,
मजदूर, भोग जैसे पियलते हैं गाँव में।
बूढ़ों को वक्त पर कभी मिलती नहीं दवा,
बच्चों को पेट मूख से जलते हैं गाँव में।।

आज २१वीं सदी का व्यक्ति, परिचार, समाज और लोक एकदूसी व्यवस्था की ओर तैरती से बड़ रत्न है। मानवीय मूल्यों के क्षय से खून के रिश्ते, पराये सेते जा रहे हैं। इस पर कवि की लेखनी बेहद प्रतीक दिखाई देती है। जैसे-

बूढ़े माँ-बाप और पुराने अजबाराँ,
या घर के पुराने सामान में अब फर्क नहीं रहा।
बूढ़े माँ-बाप अब सामान हो गये,
आज के शिक्षित युवक-युवतियों के लिए।

इसी प्रकार गाँवों की विडम्बना और सामाजिक विद्रुपताओं के विषय को लक्षित करके सरल जी लिखते हैं कि गाँवों में आज भी प्रकृति से प्राप्त संसाधनों पर सामन्तशाली का ही अधिकार है। संस्मरण साहित्य के पुरोधा प्रो. क्रांति कुमार जैन का अभिमत है कि, ‘वृंदावन राय ‘सरल’ की गजले जीवन के उदात्त मूल्यों को रेखांकित करती है और हमारे जमाने के धटियापन पर लानत भेजती है। ‘सरल’ वहाँ खड़े दिखाई देते हैं, जहाँ घर नित जल रहे हों, बूढ़ों को दवा न मिल रही हो, जहाँ शराब और जुए के अहड़े सक्किय हो। एक नट की जा रही संस्कृति को ये गजले यथार्थ से बातें करती हैं, क्योंकि हमारा लक्षण और व्यंजना को समझने

के धैर्य खो चुका है। गोबर से स्तिप्ति हुई घरती जैसी साफ-सुथरी और आत्मीय लगती हैं, वैसी ही 'सरल' जी की ये गजालें हैं। इस पर सरल जी यह गजल अधिक प्रासंगिक है कि, 'मिलेगा पूण्य तुम्हें सारे तीरथों का 'सरल' । किसी का गिरता हुआ पर संभाल कर देखो ।' गाँव के लोगों को वास्तवीक और तार्किक ज्ञान से आज भी वंचित रहना पड़ता है। गाँव के लोगों में शिक्षा के अभाव में कोई तारकरी नहीं दिखाई देती है। महज वहाँ शराब के दुकानों और जुआ के अड्डे धड़ल्ले से फल-फूल रहे हैं। इस पर कवि का रेखांकित करते हुए करता है कि-

पानी भी कुछ कुओं से है भरने पर बन्दिशें,
कुछ ऐसे भेद भाव भी चलते हैं गाँव में।

शिक्षा के नाम पर वे हुई हैं तारकिकता,
अड्डे जुआ, शराब के चलते हैं गाँव में ।।

साहित्य व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और लोक के लिए रचा जाता है। इस संदर्भ में बुदावन राय बिलकुल सटीक दिखते हैं और मानवीय वैचारिक फलक को प्रकाशित करते नज़र आते हैं। कल भी गया है कि जब व्यक्ति का भावुक मन उदाल भावों से सराबोर होता है तो निश्चय ही वह अपनी माँ की गोद को याद करता है, क्योंकि न जाने कितने भाव-विचार एवं अनुभूतियाँ माँ के साथ सीख जाते हैं। कहने का आशय यह है कि इस दुनिया में माँ ही एक ऐसी इंसान है, जो प्रत्येक बच्चे को मानवीयता का सच्चा मूल्य बताती है। कहने का आशय है कि माँ ही वह दर्पण है, जिसमें प्रत्येक इंसान को अपनी असंख्यता और उसका उद्देश्य प्रतिबिम्बित होता है। इन भावों को कवि की रचनाओं में महसूस किया जा सकता है-

“माँ के सम्मुख अंतःपावन रखता है।
दरपन के आगे तु दरपन रखता है।।
अपने घर के नेह की रीतों के जग के।
कितने कोमल सपने बचपन रखता है।।
अपने सन्-विन्धों को देख सकेंगा तु।
आईने जैसा यदि अपना मन रखता है।।”

कवि का मन साहित्यिक होने के कारण वह किसी भी धर्म, जाति एवं समुदाय में फँकें महसूस नहीं करता है। वह हर इंसान में भावान को देखता है। एक रूप बुदावन राय में दिखाई देता है। इनके काव्य में भी कबीर, जायसी, तुलसी और सूर के काव्य की धारा और मर्म की व्याकुलता और प्रेम की भाषा झलकती है। इसके अलावा इनकी गजलों में सूफी निर्पुण काव्य परम्परा भी दिखाई देती है। आज मनुष्य और समाज की कुछ अमानवीय लीज उसे गहरी खार्ई में ले जा रहे हैं, जहाँ मानवीयता को शब्द हैं, पर वहाँ मानवीयता का भाव नहीं रहता। पारम्परिक रूढ़िवादी सामाजिक व्यवस्था, गंदी राजनीति, आडम्बरवादी धार्मिकता लोगों को अंधेरे की ओर ले जा रही हैं। लोग और सत्ता की झूठी कबादत ने गरीब जनता को छलना शुरू कर दिया है। मानवीय सेवा के नाम पर उनका मानसिक और आर्थिक दोहन किया जा रहा है। राजनीति की परिचारवादी व्यवस्था ने आम जनता को अलोकतांत्रिक व्यवस्था की में ढलने पर मजबूर करती नज़र आ रही है। कवि अपने विचारों सच्ची अभिव्यक्ति को व्यक्त करते हुए कहता है कि-

आज नेता बनने के लिए लोग लाखों छव्र करतें हैं
फिर नेता बनकर करोड़ों कमालें हैं
और अपने घर की दीवारें सोने से चमका कर माँ
अपने चरित्र को दूध सा घबल बनाते हैं।

आलोचना करना तो दुनिया की रिवाज है और इसके भय से कोई अच्छा काम रोका नहीं जा सकता है। अखंड काम को रोकना भी नहीं चाहिए, इस सम्बन्ध में कवि की दृष्टि बिलकुल साफ है। एक सच्चे मनुष्य को मन में अपने सच्चे भाव को बिना किसी डर के समाज के सामने प्रकट करना चाहिए। अपने काव्य में 'सत्यमेव जयते' को चरितार्थ करने वाले समाज सेवा का भाव रखने वाले बुदावनराय 'सरल' का मानना है कि गरीब वह नहीं, जिसके पास धन नहीं है; बल्कि वह है जिसके पास नैतिक मूल्य का अभाव है। समाज पर

शासन और भ्रष्टाचार करने वाले ही इन मूल्यों को गिराने में अहम भूमिका निभाते हैं। आज जो समाज के तबक बने बैठे हैं, वही समाज को खोखला बनाकर मूल्यहीन कर रहे हैं। कवि का मानना है कि मूल्यों से हीन व्यक्ति ही संसार का सबसे गरीब व्यक्ति है। पर आज यह परिभाषा इन मूल्यों के बिलकुल विपरीत दिखाई देती है। इस पर वृंदावन राय कहते हैं कि -

गरीब की परिभाषा निर्मित करते हुए,
किसी ने जो कहा पुलिस के जुल्मों को
बुराचार सह जाये।

जिसे भ्रष्टाचार करना नहीं आया हो,
वोरो करना जो नहीं जानता हो,
जो ईश्वर से डरता हो,

वही गरीब है आजकल।"

वृंदावन राय 'सरल' के काव्य में आत्म-अभिज्ञाना की प्रखरता, वैचारिक ऊर्जा और सामाजिक बाध की ऊष्मा आदि का स्वरूप साफ दिखाई देता है। वर्तमान राजनीतिक दुस्तेज के जलने-बनने पर सहजता के साथ करारी घोट करते हुए प्रभावशाली बात कहना इनके काव्य की अनूठी खासियत है। इस संदर्भ में वे नेतृओं को लेकर कहते हैं कि -

कल प्रणेता के अपराध के,

आज नेता हमारे हुए।

मूल्य बापू के अनुपम वचन,

घुट लोनों को नारे हुए।।

हम सभी बखूबी जानते हैं कि एक अच्छा मनुष्य ही एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकता है। एक अच्छा मनुष्य बने रहने की पूरी यात्रा में मानवीय मूल्यों की अहम भूमिका होती है। इन मूल्यों के निर्माण में हमारी संस्कृति और संस्कार महती योग देती है। विशुद्ध संस्कृति ही हमारे अंतर्भूत को साफ रखती है। पर आधुनिकता की चकाचौंध में आज पूरा विश्व मानवीयता को तार-तार कर दे रही है। शहर और गाँव

में धार्मिकता उन्माद फैलाए जा रहे हैं। देश में चारों तरफ दंग, हिंसा, जातिघ उन्माद, धार्मिक उन्माद, नफरत और देश की सीमाओं में बान्दूनी मशीन छा गया है। वेकसूटों की बस्तियाँ जलाई जा रही हैं। इन कारणों से लोगों के मन में देश भक्ति की भावना कमतर होती जा रही है। देश में इन समस्याओं से लेखक और समाज दोनों चिंतित हैं। चिंतित की इस पीड़ा से लोगों को उबारने के लिए यह कहते हैं कि -

प्रेम भाव से मिलकर रहना, लेकिन कोई जुल्म न सहना।

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, सबको अपना भाई कहना।।

अपने घर को महल बनाने, निर्धन का घर कमी न दहना।

भारत के कल्याण की खातिर, हिन्दू-मुस्लिम मिलकर रहना।।

किसी भी देश के बच्चे ही उस देश के पवित्र होते हैं और इन्हीं से राष्ट्र का निर्माण होता है। अतः जरूरी होता है कि बच्चों का भाव-बोध सुसंस्कारित होना चाहिए। बच्चों को सुसंस्कारित, प्रेम-बोध एवं राष्ट्र भावना से प्रेरित करने के लिए सरल जी ने बाल कविताओं का भी सृजन किया है, जो आधुनिक युग में बहुत की प्रासंगिक और जरूरी है। इससे पहले देखा जाय तो हिन्दी साहित्य में आदिकाल से बाल कविताओं का अभाव रहा है और भक्तिकाल में महाकवि सूरदास ने कृष्ण के बाल स्वरूप में अनेक पद लिखे। शितिकाल में यह विधा लगभग शून्य ही रही है। पर आधुनिक काल में इसकी प्रासंगिकता को अनेक कवियों ने जरूरी समझा और रचनाएँ लिखीं।

आज इक्कीसवीं सदी में सरल जी ने बालकविताओं का लिखकर सूरदास की परम्परा को सफूर्त रखा है। वृंदावन राय 'सरल' के काव्य संसार के बारे में हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ आलोचक ओर व्यंग्यकार आचार्य सुरेश आचार्य कहते हैं कि 'यदि बालगीतकार

के रूप में इनकी प्रतिष्ठा है और देशवापी ख्याति है तो इसका मूल कारण उनकी यह रचनात्मकता है जो बाल-विज्ञाना को समझने के साथ-साथ उसे नये गान सुझाने, नीति युक्त जीवन हेतु तैयार करने और पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रेरित करते हुए एक अच्छे मनुष्य के रूप में, एक श्रेष्ठ जीवन किताने की शिक्षा देती है। चरित्र, कर्मलता और ईमानदारी के साथ-साथ अपने सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्व निर्वाह करने के लिए एक नई पीढ़ी तैयार करने वाले काव्य अध्यापक हैं 'सरल जी'।

प्रकृति और पर्यावरण को लेकर सरल जी बेहद सजग हैं। प्रकृति ही मानव को जीवन देती है। इसकी रक्षा करना प्रत्येक मानव का सद्कर्म है। इसके दोहन से हमारा समूचा लोक जीवन गहरे स्तर से प्रभावित होता है। पृथ्वी पर जन-जीवन, पशु-पक्षी, नदी-महाड़ आदि की रक्षा करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। आज इसकी प्रभावित होने पर पूरा प्राणी जगत प्रभावित हो गया है। नगरीय संस्कृति ने हमारे सम्भ्रात को पूर्ण रूप से बदल दी है, जिसके बदलाव में अनेक छन्दों ज्ञान हैं। इस पर कवि के मन व्यथित और मोहित है। इस पर अपनी विंता जाहिर करते हुए कहते हैं कि -

“वृक्षों को हम दे सम्मान, ये हमको भगवान समान।

पीकर हवा खिंचली जग की, देते हैं आक्सीजन दान।।”

प्रसिद्ध साहित्यिक चिंतक और आलोचक निमल चन्द 'निर्मल' कहते हैं कि, 'सरल जी ने हमारे राष्ट्रीय विचारों का पक्ष विषय के समग्र देशों के समक्ष रख दिया है। प्रकृति ने हमें जो विरासत सौंपी है यथा- जंगल, पानी, वृक्ष, पशु-पक्षी आदि को भी सुरक्षित रखने का बोध इनकी कविताओं से मिलता है।' सरल जी लिखते हैं भी है कि 'जंगल जीवन का आधार, करना होगा इससे प्यार। इसकी रक्षा बहुत जरूरी, खुशियां इससे मिलें अपार। जंगल जीवन का आधार'।

कविता मनुष्य को भीतर की मनुष्यता को जिन्या रखती है। कविता यह औपधि है, जिसका पान करके ही इंसानियत के मूल्य को बरकरार रखा जा सकता है। कविता के सम्बन्ध में सुचवन गम लिखते हैं कि, 'कविता के भीतर की शक्ति व्यक्ति, समाज, समुदाय, और राष्ट्र को मनचाहे स्वरूप प्रदान कर सकती है। इसलिए साहित्य का प्रभाव शाश्वत होता है। यह युग सापेक्ष प्रभावोत्पादक होकर भी युगनिरपेक्ष अनर्जित है, असीम है, विस्तीर्ण है, बहुदर्शी है, बहुवीकृत है, बहु प्रेरणासद है, बहु श्रुत है। इसलिए मैं कला को विश्वविवेका कहता हूँ और कविता विश्व विजयनी है। इस संदर्भ में सरल की कविता मनुष्य, समाज और राष्ट्र के निर्माण में अधिक प्रासंगिक है -

नित हृदय से हृदय जब मिलेंगे यहाँ।

फूल सद्भावना के खिलेंगे यहाँ।।

खार तुमको चुमें हो चुपन सब हमें।

ऐसी अनुभूति से अब मिलेंगे यहाँ।।

निकर्षतः वृंदावन राय 'सरल' का काव्य संसार बेहद अनूठा और प्रासंगिक है। इनके काव्य में समाज दर्शन और मानव मूल्य की सच्ची व्यापकता है, जो इंसान को जिन्या रखने और उसे एक सच्चा मनुष्य बनाये रखने की पूरी ताकत रखती है। लोक कल्याण की भावना के साथ-साथ देशप्रेम, राष्ट्रवादी स्व, प्रकृति संरक्षण आदि रूप अभिव्यक्ति होता है। इनकी रचनाशीलता प्रभावशील, सहज और प्रतियोग की संस्कृति से भरी हुई है, जिसमें शोषण, अत्याचार, भ्रष्टाचार, आतंक आदि का पुरजोर विरोध शामिल है। काव्य सामर्थ्य की गतिविधि एवं प्रत्याशा निश्चित रूप से सामाजिकता और मानवीयता को नैतिक राह की ओर ले जाती है। इनकी रचनाशीलता में पारिवारिक एवं सामाजिक आत्मीयता महसूस होती है। निस्संदेह वृंदावन राय 'सरल' का काव्य संसार समाजदर्शन एवं मानवीय मूल्यों पर यथार्थ ज़िगर करता दिखाई देता है।

ଆବଦ୍ଧ

୧. ଏମ୍ ଡି ଏସ୍ ଗଣନା ଶିକ୍ଷା, ଶ୍ରୀରାମ ପୁର 'ଗରମ', ଶିକ୍ଷକ
ସମାପନ, ପରୀକ୍ଷା କରାଯି, ଗଣନାକ୍ରମ: ୨୨୦୦୦୪, ଶିକ୍ଷକମାନ : ୭
୨୦୦୧, ପୃ ୦୦
୨. ଏମ୍ ଡି ଏସ୍ ଗଣନା ଶିକ୍ଷା, ଶ୍ରୀରାମ ପୁର 'ଗରମ', ଶିକ୍ଷକ
ସମାପନ, ପରୀକ୍ଷା କରାଯି, ଗଣନାକ୍ରମ: ୨୨୦୦୦୪, ଶିକ୍ଷକମାନ : ୮
୨୦୦୧, ପୃ ୨
୩. ଗାମ ଗାମି ଗଣନା ଶିକ୍ଷା, ଶ୍ରୀରାମ ପୁର 'ଗରମ',
ସମାପନ, ଶ୍ରୀରାମ ହିସାବ ପୁର କ୍ରମ ଗଣନା, ଗଣନା,
ସମାପନ, ଶିକ୍ଷକମାନ : ୨୦୧୩, ପୃ ୨୪
୪. ଗାମ ଗାମି ଗଣନା ଶିକ୍ଷା, ଶ୍ରୀରାମ ପୁର 'ଗରମ',
ସମାପନ, ଶ୍ରୀରାମ ହିସାବ ପୁର କ୍ରମ ଗଣନା, ଗଣନା,
ସମାପନ, ଶିକ୍ଷକମାନ : ୨୦୧୩, ପୃ ୨୪
୫. ଏମ୍ ଡି ଏସ୍ ଗଣନା ଶିକ୍ଷା, ଶ୍ରୀରାମ ପୁର 'ଗରମ', ଶିକ୍ଷକ
ସମାପନ, ପରୀକ୍ଷା କରାଯି, ଗଣନାକ୍ରମ: ୨୨୦୦୦୪, ଶିକ୍ଷକମାନ :
୨୦୦୧, ପୃ ୧୦
୬. ଗାମ ଗାମି ଗଣନା ଶିକ୍ଷା, ଶ୍ରୀରାମ ପୁର 'ଗରମ',

୭. ଗାମ ଗାମି ଗଣନା ଶିକ୍ଷା, ଶ୍ରୀରାମ ପୁର କ୍ରମ ଗଣନା, ଗଣନା,
ସମାପନ, ଶିକ୍ଷକମାନ : ୨୦୧୩, ପୃ ୨୪
୮. ଗାମ ଗାମି ଗଣନା ଶିକ୍ଷା, ଶ୍ରୀରାମ ପୁର 'ଗରମ',
ସମାପନ, ଶ୍ରୀରାମ ହିସାବ ପୁର କ୍ରମ ଗଣନା, ଗଣନା,
ସମାପନ, ଶିକ୍ଷକମାନ : ୨୦୧୩, ପୃ ୨୪
୯. ଏମ୍ ଡି ଏସ୍ ଗଣନା ଶିକ୍ଷା, ଶ୍ରୀରାମ ପୁର 'ଗରମ', ଶିକ୍ଷକ
ସମାପନ, ପରୀକ୍ଷା କରାଯି, ଗଣନାକ୍ରମ: ୨୨୦୦୦୪, ଶିକ୍ଷକମାନ :
୨୦୦୧, ପୃ ୧୦
୧୦. ଏମ୍ ଡି ଏସ୍ ଗଣନା ଶିକ୍ଷା, ଶ୍ରୀରାମ ପୁର 'ଗରମ', ଶିକ୍ଷକ
ସମାପନ, ପରୀକ୍ଷା କରାଯି, ଗଣନାକ୍ରମ: ୨୨୦୦୦୪, ଶିକ୍ଷକମାନ :
୨୦୦୧, ପୃ ୧୦
୧୧. ଏମ୍ ଡି ଏସ୍ ଗଣନା ଶିକ୍ଷା, ଶ୍ରୀରାମ ପୁର 'ଗରମ', ଶିକ୍ଷକ
ସମାପନ, ପରୀକ୍ଷା କରାଯି, ଗଣନାକ୍ରମ: ୨୨୦୦୦୪, ଶିକ୍ଷକମାନ :
୨୦୦୧, ପୃ ୧୦

୦